

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 51 — मुचुकुन्द का उद्धार

5 October 2026



निःशस्त्र प्रभु का पीछा करता यवन राजा गुफा में जिस सोते पुरुष को ठोकर मारकर जगाता है, उसी की दृष्टि से भस्म हो जाता है; फिर वह प्राचीन राजा मुचुकुन्द चतुर्भुज प्रभु का दर्शन पाकर उनके चरणों की सेवा के सिवा कुछ नहीं माँगता।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध के इस इक्यावनवें अध्याय में शुकदेवजी राजा परीक्षित को सुनाते हैं कि निःशस्त्र श्रीकृष्ण कालयवन को किस प्रकार दूर एक गुफा तक खींच ले गए, जहाँ दीर्घकाल से सोए एक राजा की दृष्टि ने उसे भस्म कर दिया; और कैसे उस राजा मुचुकुन्द ने स्वयं भगवान् का दर्शन पाकर उनकी स्तुति की।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, उत्तरार्ध)

- अध्याय: 51 (एकपञ्चाशत्तम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: मुचुकुन्द का उद्धार
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: मथुरा के नगर-द्वार के बाहर, और दूर एक पर्वत की गुफा
- केंद्रीय विषय: कालयवन का पीछा करना और भस्म होना; मुचुकुन्द का इतिहास, भगवद्दर्शन, स्तुति और वरदान
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 51, श्लोक 1–63
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, खण्ड 2)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

पचासवें अध्याय में जरासन्ध के आक्रमण विफल हो चुके थे और कालयवन की विशाल सेना मथुरा के द्वार पर आ खड़ी हुई थी। तब श्रीकृष्ण ने समुद्र के भीतर एक दुर्ग-नगरी बनवाई, योगबल से मथुरावासियों को वहाँ पहुँचाया, और कमलों की माला पहने, बिना किसी शस्त्र के, नगर से बाहर निकल पड़े।

प्रभु निकल पड़े और यवन पीछे दौड़ा

शुकदेवजी ने कथा आगे बढ़ाई: कालयवन ने देखा कि नगर-द्वार से श्रीकृष्ण उदित होते चन्द्रमा के समान बाहर आ रहे हैं — श्याम वर्ण, पीताम्बरधारी, वक्ष पर श्रीवत्स और कण्ठ में कौस्तुभ, चार विशाल भुजाएँ, कमल-से अरुण नेत्र और चमकते मकर-कुण्डल। नारदजी ने जो लक्षण बताए थे, उनसे यवन ने निश्चय किया कि ये वसुदेवपुत्र के अतिरिक्त और कोई नहीं। उन्हें निःशस्त्र और पैदल देखकर उसने भी वैसे ही उनसे भिड़ने का निश्चय किया और उनके पीछे दौड़ पड़ा; प्रभु पीठ फेरकर भागे, और जिन्हें योगी भी नहीं पा सकते, उन्हें पकड़ने की आशा में कालयवन पीछे लगा रहा।

पग-पग पर श्रीकृष्ण मानो उसकी पकड़ में आते-आते रह जाते, और इसी प्रकार वे यवनराज को दूर एक पर्वत की गुफा तक ले गए। “यदुकुल में जन्म लेकर भागना तुम्हें शोभा नहीं देता!” — कालयवन दौड़ते-दौड़ते ताना मारता रहा; किन्तु उसके पाप अभी क्षीण न हुए थे, इसलिए वह उन्हें छू न सका। इस प्रकार धिक्कारे जाने पर भी भगवान् गुफा में प्रविष्ट हो गए। यवन भी पीछे-पीछे भीतर घुसा — और वहाँ उसने एक दूसरे ही पुरुष को सोते देखा।



नारदजी के बताए लक्ष्णों से कृष्ण को पहचानकर कालयवन शस्त्र छोड़ पैदल ही प्रभु के पीछे दौड़ता है, और प्रभु उसे पग-पग पर दूर एक पर्वत-गुफा की ओर ले जाते हैं।

सोया हुआ पुरुष जागा

“अच्छा, यह चाल है — मुझे इतनी दूर लाकर यह यहाँ भोले की तरह सो रहा है!” उस सोते हुए पुरुष को ही अच्युत समझकर उस मूढ़ ने उसे ज़ोर से लात मारी। दीर्घकाल से सोया वह पुरुष उठा, धीरे-धीरे आँखें खोलीं, चारों ओर देखा, और पास खड़े यवन को देखा। हे परीक्षित, उसकी क्रुद्ध दृष्टि पड़ते ही यवन अपने ही शरीर से उत्पन्न अग्नि में जलकर क्षण भर में भस्म हो गया।



कृष्ण समझकर यवन की ठोकर से जागे दीर्घ-निद्रित मुचुकुन्द आँखें खोलते हैं; पल भर में घुसपैठिया अपने ही शरीर से उपजी अग्नि में भस्म हो जाता है।

परीक्षित ने पूछा: “हे ब्रह्मन्, यवन को नष्ट करने वाला वह पुरुष कौन था — किस कुल का, किस पराक्रम वाला, और वह उस गुफा में क्यों सो रहा था?”

देवताओं के रक्षक मुचुकुन्द

शुकदेवजी बोले: वे इक्ष्वाकुवंश में जन्मे मान्धाता के महान् पुत्र मुचुकुन्द थे — ब्राह्मणभक्त और सत्यप्रतिज्ञ। असुरों से भयभीत इन्द्र आदि देवताओं ने जब उनसे रक्षा की याचना की, तब उन्होंने दीर्घकाल तक उनकी रक्षा की। अन्त में जब देवताओं को शिवपुत्र गुह स्वर्ग के रक्षक के रूप में मिल गए, तब उन्होंने मुचुकुन्द से कहा: “हे राजन्, अब हमारी रक्षा के इस कठिन श्रम से विश्राम लीजिए। हमारी रक्षा के लिए आपने निष्कण्टक राज्य त्याग दिया और आपके सारे भोग छूट गए। आपके पुत्र, रानियाँ, बन्धु, मन्त्री और आपके समय की प्रजा — अब कोई नहीं रहा; सबको काल बहा ले गया। काल बलवानों से भी बलवान् है; वह स्वयं अविनाशी भगवान् है। जैसे ग्वाला पशुओं को हाँकता है, वैसे ही वह खेल-खेल में प्राणियों को हाँक ले जाता है।”

“आपका कल्याण हो — मोक्ष को छोड़कर कोई भी वर माँग लीजिए, क्योंकि उसके स्वामी तो केवल अविनाशी भगवान् विष्णु हैं।” यशस्वी राजा ने देवताओं को प्रणाम किया और गुफा में प्रवेश कर देवताओं की दी हुई निद्रा में सो गए; और देवताओं ने यह भी कह दिया था कि जो कोई असावधानी से उन्हें जगाएगा, वह उनकी दृष्टि पड़ते ही तत्क्षण भस्म हो जाएगा।



स्वर्ग की रक्षा के भार से मुक्त मुचुकुन्द इन्द्र और देवताओं को प्रणाम करते हैं, जो उन्हें दीर्घ निद्रा देते हैं और चेताते हैं कि जो उन्हें जगाएगा वह उनकी दृष्टि से भस्म होगा।

भगवान् ने स्वयं को प्रकट किया

यवन के भस्म हो जाने पर सात्वतश्रेष्ठ भगवान् ने बुद्धिमान् मुचुकुन्द को अपना दर्शन दिया — मेघ-से श्याम, चतुर्भुज, कौस्तुभ और वैजयन्ती माला से दीप्त, प्रेमभरी मुस्कान और चितवन वाले, मदमत्त सिंह की उदार चाल से चलते हुए। उस तेज से अभिभूत राजा ने सहमे हुए धीरे से पूछा: “कमल-दल-से कोमल चरणों से इस काँटों भरे वन में विचरते हुए आप कौन हैं जो इस गुफा में पधारे हैं? क्या आप अग्निदेव हैं, सूर्य हैं, चन्द्रमा हैं, महेन्द्र हैं या कोई अन्य लोकपाल? मैं तो आपको तीनों प्रधान देवों में श्रेष्ठ पुरुष मानता हूँ, क्योंकि जैसे दीपक अपनी प्रभा से अन्धकार हटाता है, वैसे ही आप अपने तेज से इस गुफा का अन्धकार दूर कर रहे हैं।”

“हे नरश्रेष्ठ, यदि रुचे तो हम सुनने के इच्छुकों को अपना जन्म, कर्म और गोत्र बताइए। हम इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय हैं; मैं मान्धाता का पुत्र मुचुकुन्द हूँ। दीर्घ जागरण से थककर, निद्रा से अभिभूत, मैं इस निर्जन गुफा में सोया था कि अभी किसी ने मुझे जगा दिया — और वह अवश्य अपने ही पाप से भस्म हो गया। उसके तुरन्त बाद मैंने शत्रुदमन आपको देखा। हे महाभाग, आपके असह्य तेज को हम देर तक देख नहीं पाते; आप तो सभी देहधारियों के माननीय हैं।”

“मेरे जन्म और कर्म गिने नहीं जा सकते”

समस्त प्राणियों के स्रष्टा भगवान् हँसे और मेघ-गर्जन-सी गम्भीर वाणी में बोले: “प्रिय, मेरे जन्म, कर्म और नाम सहस्रों हैं; अनन्त होने से मैं भी उन्हें गिन नहीं सकता। कोई अनेक जन्मों में पृथ्वी के धूलिकण भले गिन ले, पर मेरे गुण, कर्म, नाम और जन्म कभी नहीं; बड़े-बड़े ऋषि भी उनका अन्त नहीं पाते। फिर भी वर्तमान जन्म की बात सुनो। धर्म की रक्षा और पृथ्वी के भारभूत असुरों के नाश के लिए ब्रह्माजी की प्रार्थना पर मैं यदुकुल में आनकदुन्दुभि के घर अवतरित हुआ हूँ; वसुदेव का पुत्र होने से लोग मुझे वासुदेव कहते हैं। मैंने कंस के रूप में जन्मे कालनेमि, प्रलम्ब और सत्पुरुषों के अन्य शत्रुओं का वध किया है; और हे राजन्, यह यवन तुम्हारी तीक्ष्ण दृष्टि से भस्म हुआ है। तुमने पहले मुझसे बहुत प्रार्थना की थी, इसलिए मैं भक्तवत्सल तुम पर अनुग्रह करने ही इस गुफा में आया हूँ।”

वरान्वृणीष्व राजर्षे सर्वान् कामान् ददामि ते ।

मां प्रपन्नो जनः कश्चिन्न भूयोऽर्हति शोचितुम् ॥ ४३ ॥

varān vṛṇīṣva rājarṣe sarvān kāmān dadāmi te mām prapanno janaḥ kaścīn na bhūyo 'rhati śocitum

अर्थ: हे राजर्षि, वर माँगो; मैं तुम्हारी सारी कामनाएँ पूर्ण करूँगा। जो मेरी शरण में आ गया, उसे फिर कभी शोक नहीं करना पड़ता। (स्कन्ध 10, अध्याय 51, श्लोक 43)

मुचुकुन्द की स्तुति

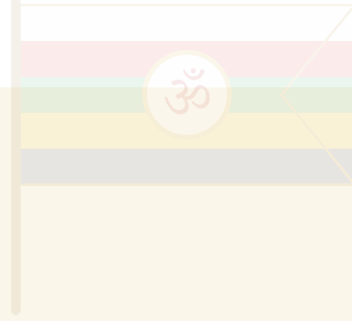
वृद्ध गर्ग मुनि की भविष्यवाणी स्मरण कर और इन्हें साक्षात् नारायण जानकर मुचुकुन्द ने प्रणाम किया और आनन्द से भरकर स्तुति करने लगे।



प्रभु को साक्षात् नारायण जानकर मुचुकुन्द अपना हृदय खोल देते हैं — अभिमान में गँवाए जीवन पर पछताते हुए और प्रभु के चरणों की सेवा के सिवा कोई उपहार न माँगते हुए।

“हे ईश, आपकी माया से मोहित और सच्चे हित से अनजान यह जीव — स्त्री हो या पुरुष — आपका भजन नहीं करता; सुख की आशा में दुःख के घर गृहस्थी से चिपटा रहता है और ठगा जाता है।”

लब्ध्वा जनो दुर्लभमत्र मानुषं
कथञ्चिदव्यङ्गमयत्नतोऽनघ ।
पादारविन्दं न भजत्यसन्मति-
गृहान्धकूपे पतितो यथा पशुः ॥ ४६ ॥



labdhvā jano durlabham atra mānuṣaṁ kathañcid avyaṅgam ayatnato 'nagha pādāravindaṁ na bhajaty asan-matir gṛhāndha-kūpe patito yathā paśuḥ

अर्थ: हे निष्पाप प्रभु, बिना प्रयास किसी प्रकार यह दुर्लभ और अंगहीनता-रहित मनुष्य-जन्म पाकर भी कुबुद्धि मनुष्य आपके चरणकमलों का भजन नहीं करता, बल्कि गृहस्थी के अन्धे कुएँ में गिरे पशु की तरह पड़ा रहता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 51, श्लोक 46)

“हे अजित, मेरा समय व्यर्थ बीत गया। राजलक्ष्मी के मद में, घड़े या दीवार जैसे इस नश्वर शरीर को ही आत्मा मानकर, मैं अनन्त चिन्ताओं में पुत्र, स्त्री, कोष और भूमि से बँधा रहा और अपनी सेनाओं के साथ उन्मत्त गर्व से पृथ्वी पर घूमता रहा, आपको कुछ न गिनते हुए। किन्तु आप, जो कभी असावधान नहीं, अपनी योजनाओं में डूबे और भोगों के लोभी असावधान मनुष्य पर मृत्यु बनकर अचानक टूट पड़ते हैं, जैसे भूखा साँप चूहे को दबोच लेता है। जो शरीर पहले स्वर्णजटित रथों पर चलता और ‘राजा’ कहलाता था, वही दुर्लभ काल के वश में अन्त में विष्ठा, कृमि या भस्म कहलाता है। दिशाओं को जीतकर समान राजाओं से वन्दित सिंहासन पर बैठा पुरुष घर में स्त्रियों का क्रीड़ामृग बनकर घुमाया जाता है; और जो तप और कर्म करके फिर सम्राट् बनना चाहता है, उसकी तृष्णा बढ़ती ही जाती है और उसे सुख नहीं मिलता।”

pralobhito varair yat tvam apramādāya viddhi tat na dhīr ekānta-bhaktānām āśīrbhir bhidyate kvacit

अर्थ: जान लो कि तुम्हें वरों का प्रलोभन केवल तुम्हारी अप्रमत्तता दिखाने के लिए दिया गया था; मेरे अनन्य भक्तों की बुद्धि वरदानों से कभी विचलित नहीं होती। (स्कन्ध 10, अध्याय 51, श्लोक 59)

“हे राजन्, अभक्तों का मन प्राणायाम आदि से रोकने पर भी फिर उठ खड़ा होता है, क्योंकि उनकी वासनाएँ क्षीण नहीं हुई। मुझमें मन लगाकर इच्छानुसार पृथ्वी पर विचरो, और मुझमें तुम्हारी भक्ति सदा अखण्ड बनी रहे। क्षत्रिय-धर्म में रहते हुए तुमने शिकार आदि में प्राणियों का वध किया; मेरा आश्रय लेकर समाहित मन से तपस्या द्वारा उस पाप को धो डालो। अगले ही जन्म में तुम सब प्राणियों के परम हितैषी श्रेष्ठ ब्राह्मण बनकर केवल मुझे ही प्राप्त करोगे।”



किसी वर से विचलित न होने वाले मन से प्रसन्न प्रभु मुचुकुन्द को अखण्ड भक्ति का आशीर्वाद देते हैं और वचन देते हैं कि अगले जन्म में वे ब्राह्मण होकर उन्हें प्राप्त करेंगे।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. प्रभु का “पलायन” एक भक्त का उद्धार था। श्रीकृष्ण भय से कालयवन से नहीं भागे। श्लोक 42 में वे मुचुकुन्द से स्पष्ट कहते हैं कि वे उस पर अनुग्रह करने ही गुफा में आए हैं, जिसने बहुत पहले उनसे प्रार्थना की थी, और श्लोक 41 में कि यवन उन्हीं के द्वारा राजा की आँखों से भस्म हुआ। यह दौड़ प्रभु का एक प्राचीन वचन निभाना था: शत्रु का अन्त और भक्त का जागरण एक ही गति में, बिना शस्त्र उठाए, पूरा हुआ, और यवन को मिला शिव का वरदान भी भंग न हुआ।
2. काल स्वयं भगवान् है। श्लोक 19 का यह सत्य मुचुकुन्द के पुत्रों, रानियों और प्रजा के लोप से सिद्ध होता है; इसका स्मरण हृदय को विनम्र और जागृत रखता है।
3. मनुष्य-जन्म भजन के लिए है, अन्धे कुएँ के लिए नहीं। श्लोक 46 उस दुर्भाग्य को नाम देता है: बिना प्रयास मिला स्वस्थ मानव-शरीर, जो कुएँ में गिरे पशु की तरह गृह-आसक्ति में गँवा दिया जाता है।

4. सब कुछ सत्संग पर टिका है। श्लोक 53 कृपा का क्रम बताता है: जीव के भटकाव का अन्त निकट आने पर सन्त मिलते हैं, और उनके संग से भक्ति का जन्म होता है।

5. वर नहीं, उनके चरण माँगो। सब कुछ मिलने की पेशकश पर मुचुकुन्द श्लोक 55 में केवल सेवा चुनते हैं; प्रभु श्लोक 59 में पुष्टि करते हैं कि यही दृढ़ता अनन्य भक्ति का लक्षण है, और श्लोक 60 में कि भक्ति-रहित साधना वासनाओं को जीवित छोड़ देती है।

एक भक्तिमय चिन्तन

सबसे अधिक हृदय को छूने वाली बात यह है कि प्रभु ने मुचुकुन्द की प्रार्थना बहुत पहले ही सुन ली थी। युगों पूर्व एक थके हुए राजा ने उनके दर्शन की याचना की थी; प्रभु ने स्वीकार किया, और फिर एक यवन के अहंकार को ऐसा रचा कि गुफा में सोया एक पुरुष आँखें खोलते ही नारायण को देखे। हमें प्रायः लगता है कि हमारी प्रार्थनाएँ खो गईं; यह अध्याय उत्तर देता है कि हर प्रार्थना प्रभु के चुने हुए क्षण की प्रतीक्षा करती है। और जब वे आते हैं, तो हमें कोमलता से परखते हैं — कुछ अस्वीकार करने के लिए नहीं, बल्कि यह दिखाने के लिए कि हम सचमुच क्या चाहते हैं। हम भी उस राजा की तरह उत्तर दें: केवल आपके चरण।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज किसी और माँग से पहले कुछ क्षण शान्त बैठकर मुचुकुन्द के चुनाव को याद कीजिए। एक सच्चे वाक्य में प्रभु को बताइए कि आपका मन किसके पीछे दौड़ता रहा है, फिर वही एक वर माँगिए जो राजा ने माँगा — उनके चरणों की सेवा — और थोड़ी देर के लिए ही सही, किसी भक्त का संग कीजिए। आरम्भ कोमल जप से कीजिए: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

यहाँ निःशस्त्र प्रभु कालयवन को गुफा में ले जाते हैं, जहाँ जागे हुए मुचुकुन्द की दृष्टि उसे भस्म कर देती है; फिर प्रभु अपना चतुर्भुज रूप प्रकट कर कोई भी वर देने को कहते हैं, और बदले में ऐसी स्तुति पाते हैं जो केवल उनके चरण चाहती है। अखण्ड भक्ति और उन तक ले जाने वाले ब्राह्मण-जन्म का आशीर्वाद पाए मुचुकुन्द हर उस जीव के प्रतीक हैं जिससे मिलने प्रभु चुपचाप स्वयं चले आते हैं। हम भी उनकी तरह हर दूसरे उपहार से ऊपर उनकी सेवा को चुनें।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (उत्तरार्ध), एकपञ्चाशत्तम अध्याय।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या भाष्य की प्रतिलिपि नहीं है। किसी प्रकाशक से सम्बद्धता या उसके समर्थन का कोई आशय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-51-the-deliverance-of-mucukunda-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

